आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 12-05-2016 ● अंक- 522 ● तारीख - 13 मई 2016, वैशाख शुक्ल - 7 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसांई -अनमोल वचन

ईश्वर का अनुग्रह

तुम सोचते हो कि पूर्व जन्मों के कर्मों और उनके फलों को भुगतना अनिवार्य है किन्तु ईश्वर का अनुग्रह पल भर में इस भार को भस्मीभत कर देगा, सत्य का साक्षात्कार एक पल में तुम्हें बोझ से मुक्त कर देगा। **-श्री सत्य सांई बाबा**

श्लोक

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा,
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां,
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम।।

भावार्थः- जिनकी माया के वशीभूत सम्पूर्ण विश्व, ब्रह्मादि देवता और असुर हैं, जिनकी सत्ता से रस्सी में सर्प के भ्रम की भाँति यह सारा दृश्य जगत सत्य ही प्रतीत होता है और जिनके केवल चरण ही भवसागर से तरने की इच्छा वालों के लिए एकमात्र नौका हैं, उन समस्त कारणों के कारण और सबसे श्रेष्ठ श्री राम कहलाने वाले भगवान हरि की मैं वंदना करता हूँ।

गरीबी में अपनी माँ के साथ घूम-घूम कर बेचा करते थे चूड़ियां, आज है आई.ए.एस.अफसर

कहते है सपने तो वो होते हैं,
जो आपको सोने नहीं देते।

महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के वारसी तहसील के महागांव के रमेश घोलप के सपने भी कुछ ऐसे थे कि उनकी नींद ने उनका साथ छोड़ दिया था। बचपन जब संभ्रांत घरों के बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार हुआ करते थे तब वह अपनी माँ के साथ नंगे पांव चूड़ियां बेचने निकल जाया करते थे। रोटी के संघर्ष में रमेश और उनकी मां गर्मी-बरसात और जाड़े से बेपरवाह होकर नंगे पांव सड़कों पर फेरी लगाया करते थे।

रमेश कलेक्टर बनने का सपना आंखों में संजोए पुणे पहुंच गए। पहले प्रयास में वे असफल रहे। वे फिर भी डटे रहे और दूसरे प्रयास में आईएस परीक्षा में 287 रैंक हासिल की। आज

वह झारखंड मंत्रालय के ऊर्जा विभाग मे संयुक्त सचिव हैं और उनकी संघर्ष की कहानी प्रेरणा पुंज बनकर लाखों लोगों के जीवन में ऊर्जा भर रही है। वाकई रमेश आज वैसे तमाम लोगों के लिए एक मिसाल हैं जो संघर्ष के बलबूते दुनिया में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं।

हमारे पैर की अस्थियाँ

सामान्यतः हाथ और पैर की अस्थियों की बनावट एक जैंसी होती है। पैर पैर की अस्थियों का आरम्भ जाँघ की अस्थि के ऊपरी भाग से होता है।

जाँघ की अस्थि से और नितम्ब-कशेरुक से लगी हुई एक चौड़ी विशेष संरचना युक्त अस्थि होती है जिसे वस्ति, कूल्हा एवं नितम्बास्थि आदि कहते हैं। ये संख्या में दो होते हैं एक नितम्ब कशेरुक के बायीं ओर दूसरी दायीं ओर होती है।

इन दोनों कूल्हों, नितम्ब कशेरुक और पूँछ कशेरुक के संयोग से एक कटोरे के आकार का एक गड्ढा बना होता है। जिसे वस्ति गह्वर कहते हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का वस्ति गह्वर कम गहरा लेकिन अधिक चौड़ा होता है। यह वस्ति गह्वर पेट का नीचे वाला भाग है। पुरुषों और स्त्रियों का मूत्राशय एवं स्त्रियों का गर्भाशय यहीं होता हैं। प्रत्येक कूल्हे में एक-एक गड्ढा होता है। इस प्रकार दोनों कूल्हों में दो गड्ढे होते हैं जिनमें अलग-अलग दोनों जाँघ की अस्थियों का गोलाकार सिरा अच्छी प्रकार फिट होता है। जाँघ की अस्थि को ऊर्वास्थि कहते हैं। इसका ऊपर वाला भाग कूल्हे से और नीचे वाला भाग घुटने से जुड़ा होता है। यह ऊर्वास्थि ठीक एक मजबूत खम्भे की भाँति शरीर को साधे रहती है। इसका मुख-पृष्ठ गोल तथा आगे की ओर कुछ झुका होता है। ऊपर का सिरा गोल, स्कन्धास्थि जैसा, एक अस्थि पर भीतर बढ़ी हुई होती है। इसका निम्न भाग कुछ चौड़ा होकर घुटने की अस्थि से जुड़ा होता है।

कड़वे प्रवचनः मुनि तरुण सागर

बतौर उदाहरण-तुम्हारी जेब में 90 रुपए हैं तो उसका आनंद लो। 100 रुपए में जो 10 कम है, इसका दुःख मत करो। 100 करने के चक्कर में मत पड़ो क्योंकि 100 तो पूरे कभी होंगे नही, मगर यह हो सकता है कि जो 90 हैं, वे भी चले जाएं। सम्राट सिकंदर के भी 100 पूरे नहीं हुए तो फिर तुम किस खेत की मूली हो ? तुम तो मूली भी बहुत मामूली हो।

मकानों में जिस प्रकार कई कमरों के साथ एक शौचालय भी होता हैं, और शौचालय में जितना समय एक व्यक्ति देता है। इतना ही समय एक व्यक्ति को राजनीति में देना चाहिए। दर-असल जीवन में राजनीति का महत्व शौचालय से ज्यादा कतई नहीं होना चाहिए। कारण कि फ्रिज में ज्यादा देर तक रखा हुआ पानी बर्फ बन जाता है। और रात-दिन राजनीति में रचा-पचा आदमी भी घाघ हो जाता है। अगर आप मां-बाप हैं तो बच्चों के साथ आत्मीयता पैदा कीजिए। बच्चों से दूरियां नहीं होनी चाहिए। अपने बच्चों के लिए थोड़ा समय जरूर निकालिए, उनके साथ बैठिए और बतियाइये। क्योंकि आपकी सबसे बड़ी संपत्ति तो वही हैं। पैसा कमाने में इतने मशगूल मत हो जाना कि बच्चे हाथ से निकल जाएं। बच्चे बिगड़ गए तो फिर पैसा कमा कर भी क्या करोगे ? बच्चे को बच्च इसलिए कहते हैं क्योंकि उसे बचाना पड़ता है। वह स्वयं बचना नहीं जानता । उसे बुरी नजर और बुरी संगत से बचाइए, वरना कल तुम्हारा बड़ा बुरा होगा।

आप विद्यार्थी हैं तो मेरी एक नसीहत ध्यान में रखिए। दसवीं-बारहवीं कक्षा के इन दो सालों में सोइये मत। रात-दिन पढ़िए क्योंकि यही दो साल हैं जहां कैरियर बनता है। दो साल सोने में निकाल दिए तो फिर जिंदगी भर जागना ही जागना है।

ऊर्जा उत्पन्न करता है - साहस

परिस्थितियां किसी के भी साथ न तो सदा अनुकूल रहती है न प्रतिकूल और न ही किसी एक वर्ग या व्यक्ति के किए बनती हैं, इसलिए सदा अनुकूलता की उम्मीद करना न केवल व्यर्थ है, अनावश्यक, अनुचित व हानिकारक भी है। उचित ये होगा कि आप अपनी साहसिकता, आत्मविश्वास और सहन शक्ति बढ़ायें, जो अनिवार्य हो उसे धेर्यपूर्वक सहन करते हुए बुद्धिमत्ता पूर्ण सोच-विचार कर निर्णय लेते हुए संकट का उचित व परिस्तिथियों के अनुरूप संकट व समस्या का हाल ढूंढें, जो उचित हो वे उपाय सोचने और प्रयास करने में कोई कमी न रहने दी जाये, हर स्थिति में संतुलन बनाये रखा जाये, कठिनाइयों व मुसीबतों से डर नहीं. वरन अपनी प्रतिभा से हाल व उपाय निकालने में बिना समय गवांये लग जाना ही साहस कहलाता है। साहस वह हथियार है जो प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलना संभव बनता है।

सामान्यतः लोग साहसी व्यक्ति का ही साथ देना चाहते हैं और उसी के नेतृत्व में नये चुनौतीपूर्ण व गैर-पारम्परिक तरीके से कार्य को करने और सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। जिस प्रकार आत्मविश्वास व्यक्ति में क्षमता का संचार करता है, उसी तरह साहस उसमें ऊर्जा उत्पन्न करता है और व्यक्ति की जीवनचर्या में किए जाने वाले कार्यों में इसका सर्वाधिक महत्त्व और ये तमाम निर्णय की शक्ति का केंद्र बिन्दु होता है।

मानव मन के बोल

साधकों के विचार

गतांक से आगे.....

साधाक छोगालाल जो :- आज का कायक्रम बहुत अच्छा रहा। जो आपश्री के टी.वी. में दर्शन करते थे, वो आपश्री को देखकर खुश हो गये थे। आज हकीकत देख रहे थे। जो कलेक्टर साहब थे वे भी आपके लिए अच्छा बोले। उन्हें मेवाड़ की पगड़ी पहनाई, जिससे वे और खुश हो गये।

गुरुजी- बोहरा गणेश जी भगवान की कृपा से आनन्द आ गया, परमानन्द आ गया, कुछ नहीं चाहिए, सब कामनाएँ पूर्ण हो गई। ईश्वर की कृपा हो गई।

मेरा गम कितना कम है

मैं जब भूतकाल के उन क्षणों में प्रवेश करता हूँ, जहाँ प्रतिक्षण यही लगता था कि आनन्द आ गया। कोई आगे की बड़ी चाहना भी नहीं थी, हाँ सेवा की चाहना थी। किसी को रोटी खिला रहे हो तो लगता है, बहुत आनन्द आ रहा है। किसी को एनासिन की गोली दे रहे हो तो भी आनन्द आ रहा है। कोई बड़ा काम करेंगे, कोई बड़ा काम करेंगे, कोई बड़ा सपना है-ऐसा कुछ नहीं। बस सपना था-सेवा का। भगवान को जवाब देना है-ना। भगवान ने बुला लिया तो क्या जवाब देंगे? थोड़ा डर रहता था। भगवान पूछेंगे-क्या काम करके आये हो? क्या फर्ज पूरा किया? यदि फर्ज पूरा नहीं किया, जिम्मेदारी पूरी नहीं की तो भगवान अपराधी घोषित करेंगे। ये पिण्डवाड़ा की पीड़ा, 40 घायल, उनका उपचार, ये सब परमात्मा ने कराया-मैंने कुछ नहीं किया। मुझे तो याद आता है लाला, 12 अप्रैल 1977 का दिन था। जब मैं आप कहेंगे बाबूजी रोज की तरह ये कैसे हो गया? रोज जाने लगे।

बाबू वो भँवर सिंह जी राव साहब और उनके 20 घायलों को भर्ती कराया तो किसी के घुटने का ऑपरेशन हुआ। 11बजे मैंने कहा-मैं रोज पोस्ट ऑफिस 12, 2, 3 बजे कैसे आऊँगा, मेरे को नौकरी भी करनी है-न।

हमारे डॉ. अग्रवाल साहब के बाहर एक प्लेट लगी हुई थीः- "वर्क इज वर्शिप", कार्य ही पूजा है। तो मैंने छुट्टी ली-बाबू। हमारे एक जैन साहब थे, उनको मैंने कहा-साहब मुझे 6 दिन की छुट्टी चाहिए।

क्रमश अगले अंक में ...

जीवनदायिनी गंगा (गंगा सप्तमी पर विशेष)

गंगा सप्तमी पौराणिक शास्त्रों के अनुसार वैशाख मास शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को मां गंगा स्वर्ग लोक से शिवशंकर की जटाओं में पहुंची थी। इसलिए इस दिन को गंगा सप्तमी के रूप में मनाया जाता है। जिस दिन गंगा जी की उत्पत्ति हुई वह दिन गंगा जयंती (वैशाख शुक्ल सप्तमी) और जिस दिन गंगा जी पृथ्वी पर अवतरित हुई वह दिन 'गंगा दशहरा' (ज्येष्ठ शुक्ल दशमी) के नाम से जाना जाता है। इस दिन मां गंगा का पूजन किया जाता है। गंगा सप्तमी के अवसर पर्व पर मां गंगा में डुबकी लगाने से मनुष्य के सभी पाप धुल जाते हैं और मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति होती है। वैसे तो गंगा स्नान का अपना अलग ही महत्व है, लेकिन इस दिन स्नान करने से मनुष्य सभी दुखों से मुक्ति पा जाता है। इस पर्व के लिए गंगा मंदिरों सहित अन्य मंदिरों पर भी विशेष पूजा-अर्चना की जाती है।

कहा जाता है कि गंगा जी में स्नान करने से दस पापों का हरण होकर अंत में मुक्ति मिलती है। इस दिन दान-पुण्य का विशेष महत्व है। शास्त्रों में उल्लेख है कि जीवनदायिनी गंगा में स्नान, पुण्यसलिला नर्मदा के दर्शन और मोक्षदायिनी शिप्रा के स्मरण मात्र से मोक्ष मिल जाता है। गंगा सप्तमी के दिन गंगा पूजन एवं स्नान से रिद्धि-सिद्धि, यश-सम्मान की प्राप्ति होती है। सभी पापों का क्षय होता है। मान्यता है कि इस दिन गंगा पूजन से मांगलिक दोष से ग्रसित जातकों को विशेष लाभ प्राप्त होता है। विधि-विधान से किया गया गंगा का पूजन।

पुराणों के अनुसार मां गंगा श्रीविष्णु के अंगूठे से निकली हैं, जिसका पृथ्वी पर अवतरण भगीरथ के प्रयास से कपिल मुनि के शाप द्वारा भस्मीकृत हुए राजा सगर के 60,000 पुत्रों की अस्थियों का उद्धार करने के लिए हुआ था, तब उनके उद्धार के लिए राजा सगर के वंशज भगीरथ ने घोर तपस्या कर माता गंगा को प्रसन्न किया और धरती पर लेकर आए। वैसे तो गंगा जी के साथ अनेक पौराणिक कथाएं जुड़ी हुई हैं, जो गंगा जी के संपूर्ण अर्थ को परिभाषित करती है। गंगा जी हमारी की आस्था का केंद्र है और अनेक धर्मग्रंथों में गंगा महत्व का वर्णन देखने को मिलता है।

एक अन्य पौराणिक एक कथा के अनुसार गंगा का जन्म ब्रह्मदेव के कमंडल से हुआ। एक अन्य मान्यता है कि वामन रूप में राक्षस बलि से संसार को मुक्त कराने के बाद ब्रह्मदेव ने भगवान विष्णु के चरण धोए और इस जल को अपने कमंडल में भर लिया।

एक अन्य कथा अनुसार जब भगवान शिव ने नारद मुनि, ब्रह्मदेव तथा भगवान विष्णु के समक्ष गाना गाया तो इस संगीत के प्रभाव से भगवान विष्णु का पसीना बहकर निकलने लगा, जिसे ब्रह्माजी ने उसे अपने कमंडल में भर लिया और इसी कमंडल के जल से गंगा का जन्म हुआ था। गंगा करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र है। अनेक धर्म ग्रंथों में भी गंगा के महत्व का वर्णन मिलता है।

गंगा जयंती के शुभ अवसर पर गंगा जी में स्नान करने से सात्विकता और पुण्यलाभ प्राप्त होता है। वैशाख शुक्ल सप्तमी का दिन संपूर्ण भारत में श्रद्धा व उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह तिथि पवित्र नदी गंगा के पृथ्वी पर आने का पर्व है, गंगा जयंती स्कन्दपुराण, वाल्मीकि रामायण आदि ग्रंथों में गंगा जन्म की कथा वर्णित है। भारत की अनेक धार्मिक अवधारणाओं में गंगा जी को देवी के रूप में दर्शाया गया है। अनेक पवित्र तीर्थस्थल गंगा जी के किनारे पर बसे हुये हैं। गंगा जी को भारत की पवित्र नदियों में सबसे पवित्र नदी के रूप में पूजा जाता है।

मान्यता है कि गंगा जी में स्नान करने से मनुष्य के समस्त पापों का नाश होता है। लोग गंगा जी के किनारे ही प्राण विसर्जन या अंतिम संस्कार की इच्छा रखते हैं तथा मृत्यु पश्चात् गंगाजी में अपनी राख विसर्जित करना मोक्ष प्राप्ति के लिये आवश्यक समझते हैं। लोग गंगाजी घाटों पर पूजा अर्चना करते हैं और ध्यान लगाते हैं। गंगाजल को पवित्र समझा जाता है तथा समस्त संस्कारों में उसका होना आवश्यक माना गया है। गंगाजल को अमृत समान माना गया है। अनेक पर्वों और उत्सवों का गंगा से सीधा संबंध है मकर संक्राति, कुंभ और गंगा दशहरा के समय गंगाजी में स्नान, दान एवं दर्शन करना महत्त्वपूर्ण समझा माना गया है।

गंगा पर अनेक प्रसिद्ध मेलों का आयोजन किया जाता है। गंगा तीर्थ स्थल सम्पूर्ण भारत में सांस्कृतिक एकता स्थापित करता है गंगा जी के अनेक भक्ति ग्रंथ लिखे गए हैं जिनमें श्रीगंगासहस्त्रनामस्तोत्रम एवं गंगा आरती बहुत लोकप्रिय हैं।

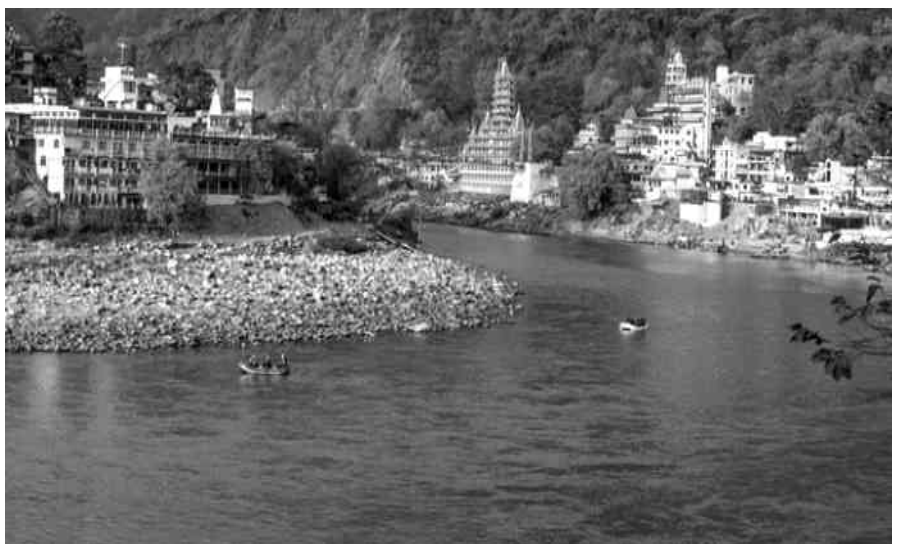

सम्पादकीय

फोन की घंटी बजी.....दूसरी ओर से आवाज आयी! भाई सा, जनरल हॉस्पिटल के कम्पाउण्ड में एक अज्ञात व्यक्ति मूर्छित अवस्था में मल–मूत्र से सना पड़ा है। लावारिस एवं अचेतन अवस्था में होने के कारण हॉस्पिटल स्टाफ एवं अन्य कोई भी इस बेसहारा की ओर ध्यान नहीं देता। लगभग एक सप्ताह से यह इसी जगह पड़ा है.....! न कुछ खाया और न ही पीया, पता नहीं किस वजह से अभी तक अपना शरीर नहीं छोड़ पाया है–यह दुःखिया। आप अगर इसे यहाँ से ले जायेंगे तो बड़ा पुण्य होगा..... और इस सूचना के साथ फोन का सम्बन्ध विच्छेद हो गया–दूसरी ओर से। तत्क्षण संस्था साधक श्री नानाभाई अपने एक बन्धु के साथ संस्था वाहन लेकर जनरल हॉस्पीटल पहुँचे! वहां का दृश्य कुछ और ही था। मानव रूप में देव आत्मा से जो सभ्य समाज द्वारा घृणा की जा रही थी, वह पहली बार देखा तो ताज्जुब हुआ कि वाह रे मानव, मानव कहलाने वाले जीव से भी तेरी यह घृणा! 20 फीट दूर से ही मल–मूत्र की बदबू का झोंका राहगिरों को अपनी गिरफ्त में ले लेता। आने जाने वाले मुंह फेर कर नाक दबाएं हुए निकल जाते थे। करत करत अभ्यास के.....ऐसे दुःखी लोगों के निरन्तर सम्पर्क ने इन साधकों को भीड़ से अलग कर दिया, उसे जाकर अपने हाथों से एक ओर लिटाया और जुट गये उसके शरीर की सफाई में। ऐसा लग रहा था जैसे साक्षात् कृष्ण सुदामा के चरण धो रहे हो। कपड़े तो यहां से पहले से ही गाड़ी में रख लिए थे, तुरन्त नये कपड़े पहनाकर उन्हें उठाकर गाड़ी में लिटाया गया, और चल पड़े सेवाधाम की ओर।

गत दिनों की भूख और प्यास ने उसके शरीर को निचोड़ कर रख दिया था, अशक्तता और कमजोरी की वजह से करवट भी नही बदल पाया था, तभी तो पीठ और घुटनों में पड़ गये थे, गहरे घाव। संस्थान द्वारा अन्न और पानी की कमी को पूरा करने के लिए ग्लूकोज चढ़ा दिया गया, और आवश्यक दवाइयाँ भी की गई प्रारंम्भ। मात्र पांच दिन की सेवा से कुछ बड़बड़ाया। प्रश्न उठा'' कंई नाम है भाया थारो'' होंठ हिले और हल्की सी हरकत जिसने शब्द दिया' उरजन अर्थात् अर्जुन। प्रश्न पुनः गहराया पिता रो नाम? उत्तर मिला भीमा। अन्य प्रश्न कई उभरे, लेकिन होठों के अन्दर ही रह गये सभी प्रश्नों के जवाब। कुछ दिनों की सेवा इन सब प्रश्नों के जवाब अवश्य दे गई। कम दिनों में जो सुधार उसके शरीर में हुआ उससे हमारी उम्मीदें बढ़ी है। सभी साधक यही मानकर इस यज्ञ में दे रहे हैं आहुति.....

सुविचार

वही व्यक्ति समर्थ है जो यह मानता है कि वह समर्थ है।

- महात्मा बुद्ध

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
01.	अराधना	भोला	18	स्त्री	मऊ	उत्तरप्रदेश
02.	रविन्द्र कुमार	शंकर	18	पुरूष	मधुबनी	बिहार
03.	दीपा देवी	रामकिशोर	19	स्त्री	महोबा	उत्तरप्रदेश
04.	तौशीफ	ईस्लाम	19	पुरूष	गया	बिहार
05.	पिंकू	गोविन्द	20	पुरूष	कूचबेहर	पं.बंगाल
06.	अब्दुल अहमद	सय्यैद अहमद	21	पुरूष	हिंगोली	महाराष्ट्र
07.	शाहजहॉन खातून	रमजान अली	22	स्त्री	गोरखपुर	उत्तरप्रदेश
08.	नीतू	दशरथ	22	स्त्री	छपरा	बिहार
09.	विनीता कुमारी	प्रकाश	23	स्त्री	शेखपुरा	बिहार
10.	रंजीता	महेन्द्र सिंह	23	स्त्री	सहारनपुर	उत्तरप्रदेश
11.	सावित्री	भारतसिंह	24	स्त्री	शाजापुर	मध्यप्रदेश

क्रमशः अगले अंक में

सोना को मिला नया जीवन

उदयपुर। कोटा निवासी सोना बाई का हृदय वॉल खराब होने के कारण उसे काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। इसी वजह से सोना देवी के पति ने भी 8 वर्ष पहले उसे छोड़ दिया था। सोना अपने बेटे दीपक के साथ जीवन काट रही थी और दीपक भी मेहनत मजदूरी कर के जैसे–तैसे घर का खर्च और माँ की दवाओं का इंतजाम कर रहा था। दीपक ने जब अपनी माँ को कोटा के एक अस्पताल में चैक कराया तो डॉक्टर ने बताया कि इनके हृदय के वॉल खराब है और इलाज पर लगभग एक से डेढ़ लाख का खर्च आएगा। इतनी बड़ी राशि का प्रबंध कर पाना इस गरीब परिवार के लिए बहुत मुश्किल था। इसी बीच इन्हें टी.वी के माध्यम से सेवा परमो धर्म ट्रस्ट का पता चला और

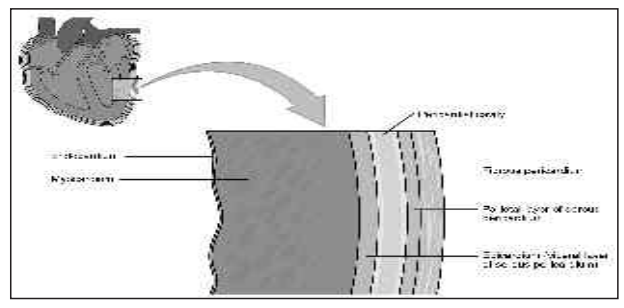

इलाज की उम्मीद लिए ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रशान्त अग्रवाल से आकर मिले। श्री अग्रवाल ने परिवार की पीड़ा और सोना देवी की स्थिति को देखते हुए इन्हें नारायण मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल जयपुर भिजवाने और इलाज की सम्पूर्ण व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा कराए जाने की व्यवस्था की।

मानव मन व उसके रहस्य (श्री सत्य साई)

आत्म विश्वास – आध्यात्मिक साधना का प्रथम चरण

सभी वेदान्त पुस्तकों का निचोड़

प्रकट करता हूँ मैं एक वाक्य में :

सभी प्राणियों और आप में व्याप्त

आत्मिक चेतना है बस एक ही।

स्मरण रखो सदैव इस सत्य को।

दिव्य आत्म स्वरूपों।

आधुनिक सभ्यता के कारण आजकल के संसार में अनेक समस्याएँ है। स्वयं जीवन ही समस्याओं की लड़ी बन गया है। बड़ा दुर्भाग्य है कि आजकल का मानव उस शक्ति, सुख, स्वास्थ्य और लम्बी आयु का लेशमात्र भी उपभोग नहीं कर पा रहा है, जिसे कि उसके पूर्वज कर रहे थे। संसार परिवहन तथा संचार सुविधाओं के विकास के कारण छोटा बन गया है। विभिन्न देशों के बीच सीमाएँ संकरी हो गयी है। आजकल किसी एक देश की समस्याएँ और कठिनाईयां उसी देश तक सीमित नहीं रहती। इसकी बजाय वह पूरे संसार में जंगल की आग की तरफ फैल जाती है और उसके प्रभाव से संसार कांपने लगता है। आजकल के मानव की दशा उस स्थिति के समान है जहाँ उसे वह कुछ मिल सकता है जिसे वह इस भौतिक संसार में चाहता है, परन्तु उसे मानसिक शक्ति ओर आनन्द नहीं मिलता।

आजकल के मानव का यह भ्रम है कि शांति और आनन्द बाहर है और इसलिये वह उन्हें बाह्य संसार में ढूंढता है। वह इस सच्चाई को नहीं पहचानता कि वह स्वयं ही शांति का स्वरूप है और वह शांति को बाहरी अशांत संसार में ढूंढने का प्रयास करता है। वास्तव में, मनुष्य अपने अधिकारों के लिये लड़ता रहता है परन्तु उसी समय अपने साथियों और अपने देश के प्रति अपने कर्तव्य को भूल जाता है। इस तरह की परिस्थिति के लिये मुख्य कारण यह है कि उसने अपने आत्मविश्वास को खो दिया है और वह सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने में ही सुख को खोजता है। आंतरिक दृष्टि की बजाय बाह्य दृष्टि की वृद्धि करने के कारण वह अपने सच्चे स्वरूप को भूल गया है। वह अपनी सच्ची प्रकृति के बारे में अनजान है। वह इतना अंधा हो गयाहै कि इस सच्चाई को नहीं पहचानता कि बाह्य संसार तो केवल उसके मन की भावनाओं का ही प्रतिबिम्ब है। वह इस सत्य को नहीं देख पाता कि उसका मन ही सब चीजों के लिये उत्तरदायी है। मन के बिना तो संसार का अस्तित्व ही नहीं है। अतः इस सत्य को पहचानना आवश्यक है कि सारा भौतिक संसार उसके अपने मन के उपर है।

क्रमशः.....

व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म शृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)

गतांक से आगे

ये ही धर्म है करूणा, सत्य, प्रेम। निजाम ने अपनी जूतियाँ दे दी और दिल्ली में आकर महामना मदन मोहन जी मालवीय ने पत्रकारों को कहा कि परसों इन जूतियाँ की बोली लगाई जायेगी, इन जूतियों को नीलाम किया जाएगा। इन जूतियों की नीलामी से जो रूपया आयेगा, उससे सरस्वती माता की पूजा की जाएगी, काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय बनाया जाएगा। लोगों ने कहा, निजाम साहब समझ जाओ, अधर्मी मत बनो। ये कुलदागी के परिवार के मत बनो, आपकी इज्जत नीलाम हो जायेगी। तब उन्होंने कुछ दान दिया और महामना मदन मोहन जी मालवीय जी ने कहा था

'मर जाऊँ माँगू नहीं, अपने तन के काज।
औरों के हित मांगत मोहे न आवै लाज'।।

(12)

बार – बार विचार कीजिए कि क्यों तो नृसिंह भगवान ने पूरे विश्व पर ऐसी महान कृपा की, कि–

'मानवधर्म उच्चतर सबसे मानव को मन से कर प्यार।
सेवा करना मनुज मात्र की सब धर्मो का यही है सार।।(13)

सद्भाव की छवं

बड़ी बड़ी गांठा ....चालो चालो रे.....दया धर्म का मूल

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में,
अब हार तुम्हारे हाथों में।।(14)
मुझमें–तुझमें है भेद यही,
मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।।(15)

हे ठाकुर, हे परमात्मा मेरी आत्मशक्ति को जाग्रत रखना नाथ। जब जंगल में, वनवासी क्षेत्रों में उन भाई –बन्धुओं ने कहा, हमें कपड़े दीजिए। भगवान ने आपको बहुत कपड़े दिये हैं, लेकिन वनवासी क्षेत्रों में लोगों के पास पहनने को कपड़े नहीं है। हमारी साधिकाएँ निकल पड़ी, हमारे साधक निकल पड़े, दौड़ पड़े वनवासी क्षेत्रों में।

बड़ी बड़ी गाँठा गाबा री, बाँध बाँध ने लावे रे।
नवाँ धुलाकर लाड़ प्यार सूं ,नान्याँ ने पहनावे रे।।(16)

ये वस्त्र भगवान ने दिए हैं, ये कपड़े ईश्वर ने दिए हैं। बच्चे आपके, हम आपके, ये संसार हमारा, हो सके उतनी सेवा करते जाइये।

दरिद्र नारायण बनकर आता कृपासिंधु भगवान है, ये सेवाधर्म महान है। अभी हमारे सरस्वती पुत्र–पुत्री ने कहा, अब सौंप दिया इस जीवन का, ये शरणागति, कितनी ताकत लगाओगे? कहाँ से लाओगे? आपकी – हमारी आत्म शक्ति ईश्वर ने दी है। ईश्वर को हाजिर नाजिर समझकर अपने उल्लास और उमंग से बार – बार प्रभु को कहिए, प्रभु मैं आपका काम करने आया हूँ। ये कपड़ा भी आपका, ये अन्न भी आपका, ये औषधियाँ भी आपकी।

बड़ा बड़ा वेकेई डॉक्टर,
सेवा भावी आवे रे।
तन मन धन सूं सेवा करने,
कतराई रोग मिटावे रे।।(17)

महीम जी– ये सेवाधर्म संगीत की मद्धम स्वर लहरियों के साथ चल रहा है। जब गुरूदेव जी के प्रसंग अनुसार कुछ ग्रामीण आदिवासी क्षेत्र के लोग बैठे हैं और संस्था के साधक–साधिकाएँ सिर पर बड़ी–बड़ी गठरियाँ लेकर निकल पड़े हैं गुरूदेव जी की आज्ञानुसार।

क्रमशः

महिलाएँ ऐसे बनाएँ दिमाग को एक्टिव

जितना आपका शरीर का एक्टिव रहना जरूरी है, उतना ही आपके दिमाग का एक्टिव रहना भी जरूरी है। इससे आपका बौद्धिक विकास होता है और आप अपने अंदर छिपी प्रतिभाओं को खोज पाती हैं। शादी के बाद अक्सर देखा जाता है कि महिलाएं अपने शौक और पढ़ाई आदि छोड़कर पूरी तरह से घर–गृहस्थी में रम जाती हैं। ऐसे में उनका बौद्धिक विकास समित हो जाता है। आपको जरूरत है आपके दिमाग को एक्टिव रखने की। आइए हम बताते हैं कि आप कैसे अपने दिमाग को एक्टिव रख सकती हैं।

अखबार और मैगजीन पढ़िएं–अगर आप जॉब नही करती है और पति और बच्चों के जाने के बाद इधर–उधर की चीजों से टाइम पास करती हैं तो अखबार और मैगजीन पढ़कर आप अपने उस टाइम का सदुपयोग कर सकती हैं। इससे आपका सामान्य ज्ञान बढ़ता है और साथ ही आप देश और दुनिया में हो रही हलचल के बारे में भी सचेत रहती है। अपने शौक पूरा कीजिएं पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते अगर आपने अपने शौक छोड़ दिए है तो अब वक्त है अपने शौक को फिर से पूरा करने का। मसलन आपको लिखने का शौक है तो अपनी इच्छा के मुताबिक कविता, कहानियां, आर्टिकल आदि लिखिएं। इससे आपका कलात्मक विकास होगा।

बच्चों को पढ़ाइएं–खाली वक्त में बच्चों क किताबें पढ़कर उन्हें खुद पढ़ाइएं। इससे आपको ट्यूटर रखने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी और आप अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए खुद भी थोड़ा और ज्ञान जुटा लेगी।

नई चीजें सीखें–आप नई चीजें जैसे लैपटॉप चलाना, नेट सर्फिंग, बैंक और बाजार के काम, फोन, बिजली आदि के बिल भरना आदि सीखकर भी अपने वक्त का सदुपयोग कर सकती है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com